

वार्तालाप—509, सातशंख (उड़ीसा), पार्ट—1, ता.06.02.08
Disc.CD No.509, dated 6.2.08 at Saatshankh (Orissa), Part-1

4.22—4.56

जिज्ञासु— बाबा, मुरली में बोला है ब्रह्मा का फोटो नहीं रखना चाहिए।

बाबा— हाँ जी—2 ।

जिज्ञासु— तो त्रिमूर्ति में तो ब्रह्मा का फोटो है, इसमें दोष नहीं लगता।

बाबा— इसलिए मुरली में बताया कि त्रिमूर्ति में, झाड़ू में, लक्ष्मी—नारायण के चित्र में, सीढ़ी में समझाने के लिए तो ब्रह्मा का चित्र तो है ही; परंतु अलग से रखने की कोई दरकार नहीं है।

Time: 4.22-4.56

Student: Baba, it has been said in the Murlis that we should not keep Brahma's photo.

Baba: Yes, yes.

Student: So, there is Brahma's photo in Trimurty. Is it not wrong?

Baba: This is why it has been said in the Murlis; Brahma's photo is already there in the picture of Trimurty, Tree, Lakshmi-Narayan, and Ladder for the sake of explaining, but there is no need to keep it separately.

5.00—6.35

जिज्ञासु— बाबा ये आकाश तत्व क्या है?

बाबा— अकाल माना जिसको काल ना खा सके।

जिज्ञासु— नहीं। आकाश तत्व; ये जो पाँच तत्वों से ये शरीर बना है ना।

बाबा— आकाश पोलार को कहा जाता है। पोलार अति सूक्ष्म से सूक्ष्म भी है और सबसे जास्ती विशाल रूप भी धारण कर लेता है। इस आकाश तत्व में पाँचों ही तत्व निवास करते हैं। जो भी सूरज, चाँद, सितारे हैं वो सब आकाश के अंदर हैं। जैसे बीज के अंदर सारा वृक्ष समाया हुआ होता है। ऐसे ही इस आकाश तत्व के अंदर सारी सृष्टि समाई हुई है। इसलिए शास्त्रों में आकाश को द्यवा के रूप में बोला है। आकाश और पृथ्वी; पृथ्वी माता है और आकाश अर्थात् द्विलोक पिता है। माता आधार है।

Time: 5.00-6.35

Student: Baba, what is this element sky (*aakaash*)?

Baba: *Akaal* means the one who cannot be devoured by *kaal* (death).

Student: No. (I am asking about) the element Sky (*aakaash*). This body is made up of five elements, isn't it?

Baba: *Polar* (space) is called sky. *Polar* assumes the subtlest as well as the most expansive form. All the five elements reside in this element sky. The Sun, the Moon, the stars, all of them are within the sky. Just as an entire tree is contained within a seed, similarly, the entire world is contained within the element sky. This is why sky has been described in the scriptures as *dyava*. Sky and Earth; Earth is the mother and sky meaning *dvilok* is the father. The mother is the base/support.

6.38—7.58

जिज्ञासु— बाबा कामधेनु गाय कौन है?

बाबा— जो सब मनोकामनायें पूर्ण करती है, उसको कामधेनु गाय कहा गया है। लक्ष्मी सिर्फ धन की आशा पूरी करती है और कामधेनु सभी कामनाओं की पूर्ति करती है; वो है जगदम्बा। जगदम्बा से सब कामनाओं की पूर्ति होती है। अभी बनना है इच्छा मात्रम् अविद्या; परंतु कोई—कोई है जो कामनाओं की पूर्ति में लगे हुए हैं। तो उनके अनेक प्रकार की कामनाओं की पूर्ति करनेवाली देवी कौन है?

जिज्ञासु— जगदम्बा।

बाबा— जगदम्बा। वो जगत की अम्बा है। जगत में देवात्मायें भी है, मनुष्य भी है और दैत्य आत्मायें भी हैं। सब धर्मों को जन्म देनेवाली है जगदम्बा।

Time: 6.38-7.58

Student: Baba, who is the cow Kamdhenu?

Baba: The one who fulfils all the desires is called the cow Kamdhenu. Lakshmi fulfils the desire of just wealth and Kamdhenu fulfils all the desires; she is Jagdamba. Jagdamba fulfils all the desires. Now we have to become *ichcha maatram avidya* (a stage where we do not even know what is meant by desires), but there are some who are busy in fulfilling their desires. So, who is the Devi who fulfils their different kinds of desires?

Student: Jagdamba.

Baba: Jagdamba. She is the mother of the world. The world includes deity souls, human beings as well as demons. Jagdamba is the one who gives birth to all the religions.

8.00—10.40

जिज्ञासु— बाबा एक पतित बनने से सारी दुनिया पतित बन जाती है।

बाबा— हाँ।

जिज्ञासु— बीज के सुधरने से सारा झाड़ सुधर जाता है।

बाबा— ठीक है।

जिज्ञासु— तो वो एक कौन है और ये जो बीज, ये बीज कौन है?

बाबा— जिस एक के लिए सारा ब्राह्मण परिवार का पुरुषार्थ रूका हुआ है। वो एक की बुद्धि में जब तक नहीं बैठेगा कि गीता का भगवान कौन, तब तक पक्का—2 कोई के बुद्धि में ज्ञान पूरा नहीं बैठेगा। भल बाप तो है ही ज्ञान का सागर और वो प्रैक्टिकल में आया हुआ है; परंतु बाप अकेला वापस नहीं जावेगा। बाप तो है ही सम्पूर्ण परंतु बच्चों को सम्पूर्ण बनाने के लिए आया हुआ है। पहले बच्चे फिर बाप। सृष्टि का पहला पत्ता कौन है?

जिज्ञासु— कृष्ण बच्चा।

Time: 8.00-10.40

Student: Baba, when one becomes sinful, the entire world becomes sinful.

Baba: Yes.

Student: When the seed reforms the entire tree reforms.

Baba: It is correct.

Student: Who is that 'one'? And who is this seed?

Baba: The one for whom the *purusharth* (spiritual efforts) of the entire Brahmin family is held up; until it fits into the intellect of that one person who the God of the Gita is, the knowledge will not fit completely in the intellect of anyone. Although the Father is the Ocean of knowledge and He has come in practice, the Father will not return (home) alone. The Father is anyway complete, but He has come to make the children complete. First the children, then the Father. Who is the first leaf of the world?

Student: Child Krishna.

बाबा— कृष्ण वाली आत्मा। तो जब तक पहला पत्ता ही सम्पन्न नहीं बना; जो जगदम्बा का पार्ट बजानेवाला है, ब्रह्मा के रूप में जगदम्बा का पार्ट बजाया और अंत में महाकाली का पार्ट बजानेवाला है, धर्मराज का पार्ट बजानेवाला है। वो आत्मा जब तक सम्पन्न न बने तब तक सबका पुरुषार्थ अटका हुआ है।

जिज्ञासु— बाबा बीज, बीज सुधरने.....

बाबा— बीज अपने में कुछ नहीं है। बीज जब तक धरणी का आधार नहीं लेता तब तक वृक्ष नहीं बन सकता। बीज सुप्रीम सोल आत्मा भी है परंतु वो सुप्रीम सोल जब तक इस सृष्टि में साकार में न आये तब तक कुछ भी नहीं, जीरो। जीरो की कोई वैल्यू नहीं होती।

Baba: The soul of Krishna. So, until the first leaf has become perfect, the one who plays the part of Jagdamba ...; he played the part of Jagdamba in the form of Brahma and is going to play the part of Mahakali, the part of Dharmaraj in the end; until that soul becomes perfect, everybody's purusharth is held-up.

Student: Baba when the seed reforms.....

Baba: The seed is nothing by itself. Until the seed takes the support of the land, it cannot become a tree. The Supreme Soul is also a seed, but until that Supreme Soul comes in this world in corporeal form, He is nothing, just a zero. Zero does not have any value.

10.48—13.08

जिज्ञासु— बाबा जगदम्बा की सोल और कृष्णवाली सोल दो आत्मायें हो गये न?

बाबा— जगदम्बा है डब्बा और उसमें प्रवेश करके पार्ट बजानेवाली या मूल आत्मा है ब्रह्मा, जिसने सहनशक्ति का पार्ट बजाया। माँ का विशेष पार्ट क्या होता है? सहनशक्ति धारण करना। ये सहनशक्ति का विशेष पार्ट जगदम्बा ने नहीं बजाया, आदि में भी नहीं बजाया, मध्य में भी नहीं बजाती और अंत में जब सारी सृष्टि का विनाश होगा तो प्रकृति माता कहो, जगदम्बा कहो, पृथ्वी माता कहो वो सारी सृष्टि का विनाश का कार्य करेगी, सहन नहीं करेगी। इसलिए मुरली में बोला है वास्तव में ये ब्रह्मा तुम्हारी जगदम्बा है; परंतु तन पुरुष का है। इसलिए माताओं—कन्याओं के चार्ज में ओमराधे सरस्वती को निमित्त बनाया गया। वास्तव में वो टाईटल मात्र है जगदम्बा का। तो असलियत में, वास्तविकता में वो कौनसी आत्मा है जो जगदम्बा है? सारे जगत को प्यार देनेवाली है। सारे जगत के जो भी असुर, देव आत्मा या मनुष्य आत्मा के रूप में बच्चे हैं उन सबको सहन करनेवाली है। कौन है?

जिज्ञासु— कृष्ण वाली आत्मा।

बाबा— कौन?

जिज्ञासु— ब्रह्मा।

बाबा— ब्रह्मा। हाँ जी, नाम ही है ब्रह्म माने बड़ी और मा माना माँ। उसका दूसरा नाम है जगदम्बा।

Time: 10.48-13.08

Student: Baba, the soul of Jagdamba and the soul of Krishna are two souls, aren't they?

Baba: Jagdamba is the box and the soul that enters in it and plays a part or the main soul is Brahma, who played the part of tolerance. What is the special part of a mother? To practice tolerance. It is not Jagdamba who played the special part of tolerance; neither did she play that role in the beginning, nor does she play it in the middle; and in the end when the entire creation is destroyed, you may call her mother nature, Jagdamba or mother Earth, she will perform the task of destruction of the entire creation; she will not tolerate [anything]. This is why it has been said in the Murli, 'actually this Brahma is your Jagdamba; but the body is of male. This is why Om Radhey Saraswati has been made an instrument in charge of mothers and virgins'. Actually, that[which she holds] is only a title of Jagdamba. So, in reality, actually, who is the soul that is Jagdamba? She gives love to the entire world. She tolerates all the children who are in the form of demons, deity souls or human souls in the entire world. Who is she?

Student: The soul of Krishna.

Baba: Who?

Student: Brahma.

Baba: Brahma. Yes. The name itself is *Brahm*, i.e. senior and *ma* means mother. His other name is Jagdamba.

15.40—19.00

जिज्ञासु— बाबा, शंकर के मस्तक में झटा क्यों दिखाया?

बाबा— आजकल के साधु—सन्यासी जो है, वो शंकर को फॉलो करते हैं, बड़ी—2 लम्बी—2 झटाएँ रखाते हैं। और वो झटाएँ एक दूसरे से उलझ जाती है, बाल। झटा का रूप धारण कर लेती है। मतलब ये है, वो रामवाली आत्मा कहो या शंकरवाली आत्मा कहो अथवा व्यासवाली आत्मा कहो; द्वापर और कलियुग के भक्तिमार्ग में ज्ञान सूत उलझा हुआ रहता है। और वो ज्ञान सूत इस धड़ में उलझा हुआ रहता है या मस्तक में उलझा हुआ रहता है? ज्ञान का सूत जो भक्तिमार्ग में मुझा हुआ है, वो मस्तक में मुझान है या शरीर के अंदर मुझान है? मस्तक के अंदर। तो कैसे दिखाये? इसलिए बाल दिखाय दिये हैं, विश्वपिता को। और वो बाल... जब ज्ञान गंगा के रूप में ईश्वरीय ज्ञान इस सृष्टी पर आता है, बाप मनुष्य सृष्टी के पिता में प्रत्यक्ष होता है तो वो झटायें सुलझने लगती है। जैसे बाल धोने से बाल अलग—2 हो जाते हैं। एक—2 बात क्लीयर होने लगती है। ऐसे ही शंकर को उलझी हुई और सुलझी हुई झटायें दिखाई गई है।

Time: 15.40-19.00

Student: Why is knotted hair shown on Shankar's head?

Baba: Nowadays the holy men (*sadhu*) and sanyasis follow Shankar, they keep long matted hair (*jhatayein*) [on their head]. And that hair is entangled in one another. It takes the form of *jhata* (matted hair). That is to say, call him the soul of Ram or call him the soul of Shankar or call him the soul of Vyas; in the Copper and Iron Ages, in the path of bhakti that thread of knowledge is knotted (confusing). Moreover, is that thread of knowledge knotted on this body or is it knotted on the head? The thread of knowledge that is confusing in the path of bhakti, is that confusion in the head or inside the body? It is inside the head. So how can we show it? For that reason, hair has been shown on [the head of] *Vishwapita* (the father of the world). And that hair...when the knowledge of God comes to this world in the form of the knowledge of Ganga (*gyan ganga*), when the Father is revealed in the father of the human creation, the knotted hair begins to be released. Just like when hair is washed, the hairs become separated. Each topic begins to be clarified. In this way, Shankar is shown with both knotted hair and loose hair.

20.43—21.50

जिज्ञासु— बाबा कोई आदमी शरीर त्याग करता है तो उसको शमशान ले जाते हुए कहते हैं राम नाम सत्य है, हरि नाम सत्य है। तो राम और हरि एक ही व्यक्तित्व है या अलग है?

बाबा— इतनी एड़वान्स ज्ञान की पढ़ाई इतने वर्षों तक पढ़ ली और अभी तक ये नहीं पता चला कि राम—कृष्ण का जो व्यक्तित्व है वो एक ही है...

जिज्ञासु— हरि और राम।

बाबा— हरि कहते हैं कृष्ण को और हर कहते हैं शंकर को। हरि और हर ये दो शब्द हैं। हरि शब्द कृष्ण का सूचक है, हरिद्वार और हर शंकर का सूचक है, हर—हर महादेव। तो ये दोनों आत्मायें एक ही पर्सनालिटी के द्वारा वास्तव में कार्य करती हैं या अलग—अलग पर्सनालिटी के द्वारा सम्पन्न रूप में प्रत्यक्ष होती हैं? एक ही के द्वारा प्रत्यक्ष होती है।

Time: 20.43-21.50

Student: Baba, when a person leaves his body, while taking him to the cremation grounds, people say, the name of Ram is true, the name of Hari is true. So, is Ram and Hari the same personality or different personalities?

Baba: You have studied advance knowledge for so many years and have you not come to know so far that the personality of Ram and Krishna is the same....

Student: Hari and Ram.

Baba: Krishna is called *Hari* and Shankar is called *Har*. *Hari* and *Har*: these are two words. The word *Hari* indicates Krishna, Haridwar (the name of a pilgrimage center in North India); and *Har* indicates Shankar, *Har-Har-Mahadev*. So, do these two souls act through the same personality or are they revealed in a perfect form through different *personalities*? They are revealed through the same *personality*.

21.53–23.25

जिज्ञासु— बाबा भट्ठी करने के बाद, आप और सच्चा ज्ञान जानने के बाद भी मुझे निश्चय गिरा है लगता है।

बाबा— निश्चय?

जिज्ञासु— नीचे गिर जाता हूँ।

बाबा— नीचे गिर जाता हूँ। अनिश्चय आता है तो; निश्चय बुद्धि विजयते और अनिश्चय बुद्धि विनश्यते। विनश्यते माना नीचे गिरना, विजयते माना ऊपर उठना। निश्चय अटल बना रहे तो पवित्रता मेन्टेन होगी या नीचे गिरेगी? पवित्रता बनी रहेगी। अनिश्चय आने से ही अपवित्रता बढ़ती है। इसलिए कहा जाता है निश्चय बुद्धि विजयते। इन्द्रियों पर विजय होती है, माया पर विजय होती है, और बाप के ऊपर ही अनिश्चय आ गया माना बच्चा मर गया, मुर्दा हो गया। तो नीचे गिरेगा (या) ऊपर उठेगा? नीचे ही गिरना होगा। घड़ी-घड़ी निश्चय, घड़ी-घड़ी अनिश्चय। ये 84 जन्मों के पार्ट को बिगाडने वाली बात है।

Time: 21.53-23.25

Student: Baba after doing *bhatti*, even after knowing you and the true knowledge I feel that my faith goes down.

Baba: Faith?

Student: I fall down.

Baba: I fall down? When you lose faith...; the one who has a faithful intellect gains victory and the one who has a doubtful intellect is destroyed. Destruction means downfall; victory means to rise up. If the faith remains unshakeable, then will the purity be maintained or will it fall? The purity will remain intact. Losing faith itself leads to increase in impurity. This is why it is said: the one who has a faithful intellect gains victory; he gains victory over the [bodily] organs, he gains victory on maya and if someone loses faith on the Father, it means that the child died, he became a corpse. So, will he meet downfall or will he rise? He will meet downfall only. Gaining faith one moment and losing faith another moment is something which spoils the part of the 84 births.

23.35–24.43

जिज्ञासु— बाबा, शंकर शेर का छाल पहनने का मतलब क्या है?

बाबा— शंकर को दिखाते हैं बाघम्बर। उन्होंने जो वस्त्र लपेटा हुआ है वो कौनसा वस्त्र लपेटा है? बाघ की खाल। इसका मतलब ये है कि उनका जो शरीर रूपी वस्त्र है वो ऐसा पुरुषार्थी रथ है जो शेर के मुआफिक पुरुषार्थ करनेवाला है, शेर के मुआफिक छलांग लगानेवाला है, शेर के मुआफिक सामना करने की शक्तिवाला है, शेर के मुआफिक संसार रूपी जंगल में दहाड़ मारनेवाला है इसलिए उनको शेर की खाल लपेटी हुए दिखाया गया।

Time: 23.35-24.43

Student: Baba, what is meant by Shankar wearing a lion's skin (as clothing)?

Baba: Shankar is shown to be *Baaghambar* (one who wears tiger's skin as clothes). The cloth which he has worn; which cloth has he worn? [He has worn] the skin of a tiger. It means that his cloth-like body is such a *purushartha* chariot (spiritual effortmaking chariot) which makes efforts like a lion; he leaps like a lion; he has the power to face [situations] just like a lion; he roars in the jungle-like world just like a lion; this is why he has been shown to be wearing lion's skin.

24.50–29.28

जिज्ञासु— बाबा कुंडलिनी शक्ति कैसे जागृत होगी?

बाबा— कुंडलिनी शक्ति...

जिज्ञासु— कैसे जागृत होगी?

बाबा— ये क्या होती है? ये बापदादा की तो भाषा नहीं है।

जिज्ञासु— कुंडलिनी जोग...

बाबा— हाँ—2, ये क्या चीज़ होती है ये तो बताओ। मुरली में, अव्यक्तवाणी में तो कुंडलिनी शक्ति की बात नहीं आई है। आई है?

जिज्ञासु— नहीं।

बाबा— नहीं आई है। तो आपने कही से उठाई होगी। कहाँ से उठाई है, क्या बात है?

Time: 24.50-29.28

Student: Baba, how will the *kundalini* power be awakened?

Baba: *Kundalini* power.....

Student: How will it be awakened?

Baba: What is it? This is not Bapdada's language.

Student: *Kundalini* yoga...

Baba: Yes, yes, at least tell me, what it is. *Kundalini* power has not been mentioned in the *Murli, Avyakta Vani*. Has it been [mentioned]?

Student: No.

Baba: It has not been mentioned. So, you must have picked it up from somewhere. From where have you picked it up? What is the matter?

जिज्ञासु— बाप बोलते हैं ना कुंडलिनी शक्ति.....

बाबा— बाप बोलते हैं? बाप ने तो नहीं बोला। भक्तिमार्ग में गुरुओं ने ऐसे बताया है कि कुंडलिनी एक सर्प के आकार की है। जो रीढ़ के हड्डी के नीचे बैठी हुई रहती है, सोई पड़ी है और योगिक क्रियाओं के द्वारा उसको जागृत किया जा सकता है। ना आज तक किसी ने जागृत किया और न किसी को जागरण करा पाया। अगर कराया हो, तुमने देखा हो कोई तो बताओ। देखा है?

जिज्ञासु— नहीं।

Student: The Father says [about] *kundalini* power, doesn't He?

Baba: Does the Father speak (about *kundalini* power)? The Father has not spoken about it. The gurus of the path of *bhakti* have said that *kundalini* is in the shape of a snake which remains seated below the backbone. It is asleep. And it can be awakened through yogic procedures. Neither has anyone awakened it till date nor has anyone been able to help anyone awaken it. If someone has enabled, if you have seen someone, tell me. Have you seen?

Student: No.

बाबा— नहीं। कहते हैं कुंडलिनी शक्ति जागृत होकर के आठ चक्रों में से प्रसार होती हुई अगर सहस्रत्रा सार में, आखरी चक्र में पहुँच जाये तो आदमी अमर हो जाता है। कोई अमर हुआ क्या? दिखाई पड़ा? ये कुंडलिनी शक्ति कोई चीज़ नहीं है। जो आत्मा की शक्ति है,

प्योरिटी, जो अभी अपवित्र होकर के सोई पड़ी है। कहाँ सोई पड़ी है? कहाँ कुंडलिनी मार के बैठा हुआ है वो सांप? कामेन्द्रियों के नज़दीक। वो जागृत हो जाये और वो शक्ति ऊपर चढ़ने की अभ्यासी हो जाये तो मनुष्य अकालतख्त पर बैठने काबिल बन सकता है, अमर बन सकता है। काल सारी मनुष्य सृष्टि को खायेगा; लेकिन जिन्होंने ये शक्ति जागृत कर ली, पवित्रता की शक्ति उनको नहीं खायेगा; उनको कहेंगे प्रकृतिजीत। प्रकृति के पाँच तत्वों को जीतनेवाले, मायाजीत।

Baba: No. They say that if the *kundalini* power is awakened and after passing through the eight *chakras* (circles) if it reaches the last *chakra*, i.e. the *sahasraar chakra* (it is believed to be the highest chakra located in the apex of the head) a person becomes immortal. Has anyone become immortal? Have you seen anyone? This *kundalini* power is not some thing. [It is] the power of the soul, i.e. purity, which is now asleep, after becoming impure. Where is it asleep? Where is that snake lying coiled up? Near the organs of lust. If that is awakened and if that power becomes used to rising up, then a human being can become capable of sitting on the *akaaltakht* (immortal throne), he can become immortal. Death will devour the entire human world, but it will not devour those who have awakened this power, the power of purity. They are said to be conquerors of nature, the ones who gain victory over the five elements of nature, the conquerors of maya.

इसलिए बाप ने सहज रास्ता बताया है। उन गुरुओं ने तो कठिन-कठिन प्राणायाम और कठिन-कठिन आसन बताए दिये हैं। यहाँ तो कोई कठिनाई नहीं है। सिर्फ कहते हैं अपन को ज्योतिबिंदु आत्मा समझो और मुझ ज्योतिबिंदु बाप को साकार में, मुकर्रर रथ में याद करो; ताकि सैम्पल सामने रहे कि ऐसा तीव्र पुरुषार्थ हमको भी करना है। बाबा को याद करो। बाबा कहा ही जाता है साकार-निराकार के मेल को। ये कुंडलिनी शक्ति और ये शक्ति और अष्टचक्र और ये सब-2 फालतू बातें हैं। जब बाप हमें पढ़ाई पढ़ाने आया हुआ है तो हम दूसरों की पढ़ाई हुई पढ़ाई बातें क्यों पढ़े जो हम 63 जन्म पढ़ते-पढ़ते नीचे गिरते आये?

This is why the Father has shown an easy path. Those gurus have taught difficult *pranayams* (breathing exercises) and difficult *asanas* (physical postures). There is no difficulty here. He just says, 'consider yourself to be a point of light soul and remember Me, the point of light Father in the corporeal, in the permanent chariot', so that a sample remains in front of you [showing you] that you have to make such fast spiritual efforts, too. Remember Baba. The combination of corporeal and incorporeal is called Baba. This *kundalini* power and this power and the eight *chakras* are all wasteful topics. When the Father has come to teach us, why should we study the knowledge taught by others which we have studied for 63 births and have been experiencing downfall?

29.30-36.36

जिज्ञासु- (बाबा लक्ष्मी का नाम नारायण से पहले क्यों लिया जाता है?)

बाबा- छह महीने से ये प्रश्न चलता चला आ रहा है और छह महीने से वही प्रश्न वही बार-2 पूछे जा रहे हैं। इसका मतलब रोज का क्लास अटेन्ड नहीं हो रहा है। लक्ष्मी-नारायण, राधा- कृष्ण, सीता-राम, इनमें शक्तियों का नाम पहले है और पाण्डव का नाम बाद में। माना देवी का नाम पहले है और देवता का नाम बाद में क्योंकि ये देवी-देवतायें कहे जाते हैं। जो धर्म स्थापन होता है उसका नाम क्या पड़ता है? देवता-देवी सनातन धर्म या देवी-देवता सनातन धर्म? देवी-देवता सनातन धर्म। क्योंकि पवित्रता की शक्ति को कन्याओं-माताओं ने पहले धारण किया है और जास्ती धारण किया है। कन्यायें-मातायें और पुरुष वर्ग उनको अलग-2 मुरली में टाईटल मिले हैं।

Time: 29.30-36.38

Student: (Baba, why is Lakshmi's name taken before Narayan's name?)

Baba: The same question is being discussed for the last six months and the same question is being asked repeatedly for the last six months. It means that people are not attending the daily class. Between Lakshmi and Narayan, Radha and Krishna, Sita and Ram, the name of the *shaktis* (consorts) appears first and the name of the Pandava (i.e. the male deity) appears after that. It means that the name of the female deity (*devi*) comes first and then comes the name of the male deity (*devta*) because they are called *devi-devta*. What is the name of the religion which is being established? Is it *Devta-devi sanatan dharma* or the *Devi-devta sanatan dharma*? It is *Devi-devta sanatan dharma* because the virgins and mothers have assimilated the power of purity first and to a greater extent. The category of virgins and mothers and the category of men have been given different titles in the Murlis.

बोला है कोई—2 कन्यायें—मातायें सूर्पनखा और पूतना होती है। जो नर्क का दरवाजा खोल के बैठ जाती हैं, व्यभिचार का। बाकि भारत की मोस्टली कन्यायें— मातायें शिव शक्तियाँ हैं, स्वर्ग का दरवाजा खोलने वाली हैं, अव्यभिचारी जीवन पसंद करती हैं, पवित्रता को अपने जीवन में धारण करना पसंद करती हैं और पुरुषों को सबको बताया है दुर्योधन—दुःशासन। चाहे वो राम—कृष्ण की ही आत्मायें क्यों न हो पुरुषार्थी जीवन में। तो जो पढ़ाई का मूल तंत है, मूल लक्ष्य है वो पवित्रता है या और कोई चीज़? पवित्रता। और उस पवित्रता को मन्टेन करने में शक्तियाँ सबसे आगे गईं। देवियाँ सबसे आगे गईं और देवत्व पद प्राप्त किया। तो देवियों का नाम आगे आना चाहिए या नहीं आना चाहिए?

जिज्ञासु— आगे आना चाहिए।

It has been said that there are some virgins and mothers who are *Surpanaka* and *Pootna* (villainous characters of Hindu mythology) who sit opening the gateway to hell, the gateway to adultery. Whereas most of the virgins and mothers of India are Shiv-shaktis; they are the ones who will open the gateway to heaven; they like unadulterous life; they like to assimilate purity in their lives and all the men have been described as Duryodhans and Dushasans; even if it is the souls of Ram and Krishna in their *purushartha* life. So, is the main essence, the main goal of the studies purity or any other thing? Purity. And in case of maintaining that purity, *shaktis* have galloped ahead of everyone. *Devis* went ahead of everyone and achieved divine post. So, should the name of *devis* come first or not?

Student: It should come first.

बाबा— जरूर आना चाहिए। बाकी रही शंकर—पार्वती। इसमें शंकर का नाम पहले क्यों रख दिया और पार्वती का नाम पीछे क्यों कर दिया? इसलिए कर दिया कि और—2 देवताओं के बीच में शंकर एक ऐसा पुरुषार्थी है जिसके तीव्र पुरुषार्थ के रिजल्ट के कारण उसका नाम शिव के साथ जोड़ा जाता है। और कोई देवता ऐसा नहीं है 33 करोड़ देवताओं में जिसका नाम शिव के साथ जोड़ा गया हो और वो जोड़ा भी क्यों जाता है? क्योंकि शिव निराकारी दुनिया से साकारी दुनिया में आता है तो मुर्करर रूप से एक ही रथ में विराजमान हो कर के कार्य करता है। अब एक ही रथ में दो आत्मायें हैं एक शिव और दूसरा शंकर। और पार्वती में तो शिव की विराजमानता मुर्करर रूप से नहीं दिखाई जाती। वो तो लास्ट में सिर्फ प्रैक्टिकल पार्ट बजाने मात्र के लिए है। आदि में भी प्रवेश नहीं, मध्य में भी प्रवेश नहीं सिर्फ अंत में वैष्णवी, विष्णु शक्ति, नो विष एट आल ऐसा प्रैक्टिकल जीवन लेकर के ब्राह्मण बच्चों के सामने प्रत्यक्ष होती है।

Baba: It certainly should come first. As regards Shankar Parvati, why was Shankar's name placed first and Parvati's name placed later? It is because among all the deities Shankar is such a *purushartha* that as a result of his intense *purushartha* his name is joined with Shiv.

There is no other deity among the 330 million deities whose name is joined with Shiv, and why is it joined? It is because when Shiv comes from the incorporeal world to the corporeal world, He sits only in one chariot in a permanent way and does the work. Now, there are two souls in the same chariot, one is Shiv and the other is Shankar. And the presence of Shiv in Parvati is not shown in a permanent way. She is meant only to play a practical part in the *last*. He does not enter her either in the beginning or in the middle; only in the end she is revealed in front of the Brahmin children as Vaishnavi, Vishnu *shakti* with a practical life of 'no *vish* (poison) at all'.

लेकिन वो तब प्रत्यक्ष होती है जब शिवबाप का ज्ञान मुकरर रथ के द्वारा मिलता है; नहीं तो लक्ष्मी कहाँ से ज्ञान धन लायेगी? कहाँ से लाती है? नारायण से ही लाती है। इसलिए देवी-देवताओं के पेयर्स, जोड़ी का जब नाम लिया जाता है तो लक्ष्मी का नाम पहले, सीता का नाम पहले, राधा का नाम पहले आता है। परंतु जहाँ भगवान-भगवती की बात आती है वहाँ भगवान के रूप में सिर्फ एक ही साकार रूप है जो संसार में प्रत्यक्ष होता है। शंकर। स्वयं देवता है, देवत्व पद पानेवाला है; परंतु उस बड़े ते बड़े बच्चे में ही बाप प्रवेश हो कर के भगवान का टाईटल दिलाता है। इसलिए भगवान-भगवती शंकर-पार्वती को कहा जाता है। भगवान-भगवती में भगवती को आगे रखेंगे या भगवान को आगे रखेंगे?

जिज्ञासु- भगवान।

बाबा- भगवान को आगे रखना पड़े। और देवी-देवताओं, देवी-देवता शब्द जब बोलेंगे तो देवी को आगे रखना पड़े या देवता को आगे रखना पड़े? देवी को आगे रखना पड़े।

But she is revealed when she receives the knowledge of the Father Shiv through the permanent chariot. Otherwise, from where will Lakshmi bring the wealth of knowledge? From where does she bring it? She brings it only from Narayan. This is why when the names of the pairs, couples of deities are taken, Lakhmi's name, Sita's name, Radha's name is taken first. But when it is about *Bhagwaan-Bhagwati*, there is only one corporeal form in the form of God who is revealed in the world. Shankar. He himself is a deity; he achieves the post of a deity, and the Father enters only that eldest son and enables him to acquire the title of *Bhagwaan*. This is why Shankar and Parvati are called *Bhagwaan-Bhagwati*. Between *Bhagwaan* and *Bhagwati*, will you place *Bhagwati* first or *Bhagwaan* first?

Student: *Bhagwaan*.

Baba: You will have to place *Bhagwaan* first. And when you say the word '*devi-devta*', will you have to say *devi* (female deity) first or *devta* (male deity) first? You will have to say *devi* first.

36.45-44.10

जिज्ञासु- बाबा ने बोला है कि बात मेरी मानो और फॉलो ब्रह्मा को करो।

बाबा- ठीक है।

जिज्ञासु- इसका मतलब क्या होता है बाप जो कहते हैं वो काम करते नहीं है क्या?

बाबा- जो शक्तिशाली होता है, जो पॉवरफुल होता है। जैसे रवि, जल, पावक ये शक्तिशाली तत्व हैं। सूर्य गंद को खा लेता है, सुखा देता है। ऐसे गंद को खानेवाले, सुखानेवाले सूर्य को कोई नीच नहीं कहता। अग्नि गंद को जलाए देती है, गंद को खा जाती है, भस्म कर देती है; अग्नि को कोई नीच नहीं कहता। क्यों? क्योंकि उनमें ये शक्ति है। भक्तिमार्ग में भी कहते आये हैं गुरु जो कहे सो करना है, गुरु जो करता है वो नहीं करना है। क्योंकि गुरु के पास तो जानकारी है; वो जानकारी शिष्यों के पास नहीं है। इसलिए बोला कि दो पार्ट हैं - एक करनहार और दूसरा करावनहार। करनहार का पार्ट किसके द्वारा बजाया? भूल गये?

जिज्ञासु- ब्रह्मा के द्वारा।

Time: 36.45-44.10

Student: Baba has said that Listen to My words and follow Brahma.

Baba: It is correct.

Student: What does it mean; whatever Father says.....

Baba: The one who is powerful; for example, the Sun, water, and fire – these are powerful elements. The sun devours or dries dirt. Nobody calls the Sun, which devours and dries dirt in this way, degraded. Fire burns dirt, devours dirt, it turns dirt into ashes. Nobody calls fire degraded. Why? Because they have this power. Even in the path of *bhakti* people have been saying: We should do whatever guru says; we should not do whatever guru does because guru has knowledge; disciples do not have that knowledge. This is why it has been said that there are two roles: One is *karanhaar* (doer) and the second is *karaavanhaar* (enabler). Through whom was the part of *karanhaar* played? Have you forgotten him?

Student: Through Brahma.

बाबा— ब्रह्मा के द्वारा बजाया। बच्चों ने किया, बच्चे कर रहे हैं, नहीं कर रहे हैं ब्रह्मा ने नहीं देखा। क्या किया? बच्चे करे या ना करे लेकिन मुझे, मुझे कर के दिखाना है; तो वो हुआ करनहार का पार्ट। फिर, बच्चों ने चलो अपनी मनमानी की, कुछ भी करते रहे ब्रह्मा ने तो कर के दिखाया। तो जिन बच्चों ने मनमानी की, ब्रह्मा को फॉलो ही नहीं किया, और ही उल्टा किया तो उन बच्चों को शिक्षा मिलनी चाहिए कि नहीं मिलनी चाहिए? नहीं मिलनी चाहिए?

जिज्ञासु— मिलनी चाहिए।

Baba: It was played through Brahma. Brahma did not see whether children did, whether children are doing or not doing. What did he do? [He thought] ‘Whether children do or not, but I have to set an example’; that is a part of *karanhaar* (doer). Then, ok, children did as they wished; they did whatever they wanted; Brahma set an example. So, the children who acted according to their mind’s wishes and did not follow Brahma at all, moreover acted oppositely; so should those children be taught a lesson or not? Should they not?

Student: They should.

बाबा— मिलनी चाहिए। फिर बाप अडभंगा रूप पकड़ता है और मुरली में बोल भी देता है बच्चे तुम्हारा बाप आया हुआ है। वो है करावनहार पार्ट। खुद करेगा या नहीं करेगा, करेगा तो भी कोई अंतर नहीं पड़ता क्योंकि निराकारी स्टेज में किये हुए कर्म क्या बन जाते हैं? अकर्म बन जाते हैं। और नहीं करेगा तो भी कोई अंतर नहीं पड़ता। क्यों? नहीं करेगा तो अंतर क्यों नहीं पड़ता? क्योंकि मुरली में बोला हुआ है मैं जिस तन में आया हुआ हूँ उसकी जिम्मेवारी मेरे ऊपर है। ये जो भी कर्म करता है, जो भी कुछ बोलता है उसका जिम्मेवार कौन? शिवबाबा। तुम ये क्यों सोचते हो कि ये इसने किया या शिवबाबा ने किया, ये यह कहता है या शिवबाबा कहता है। तुम ऐसे ही समझो, क्या? कि शिवबाबा का डायरेक्शन है। तो उसमें तुम्हारा ही फायदा है। अगर ये समझा इस देहधारी का डायरेक्शन है तो क्या होगा? उल्टे हो जावेंगे। इसलिए बताया कि करनहार का पार्ट दादा लेखराज ब्रह्मा के द्वारा कर के दिखाया। क्योंकि बच्चों को देवता बनना है या भगवान बनना है?

जिज्ञासु— देवता बनना है।

Baba: They should get. Then the Father assumes an extraordinary (*arbhang*=*strange*) form and He also says in the Murli: Children, your **Father** has come. That is the part of *karaavanhaar* (enabler). He may or may not do Himself. It does not make a difference even if He does because what do the actions performed in an incorporeal stage become? They become *akarma*. And it does not make any difference even if He does not do. Why? Why does it not make a difference if He does not do? It is because it has been said in the Murli: I

am responsible for the body in which I have come. Who is responsible for whatever actions this one performs, whatever words that this one speaks? Shivbaba. Why do you think this one did that or Shivbaba did that; this one speaks this or Shivbaba speaks this? Always think; what? That it is Shivbaba's direction. Then you will benefit from it. If you think that it is the direction of this bodily being, then what will happen? You will become opposite. This is why it has been said that the part of doer (karanhar) was performed through Dada Lekhraj because ...do the children have to become deities or God?

Student: They have to become deities.

बाबा— देवता बनना है। देवताओं का मुख्य गुण क्या होता है? सहनशीलता। तो बच्चों को तो सहनशीलता धारण करनी है और जिस तन में प्रवेश करता हूँ, वह और उसकी विशेष सहयोगिनी शक्ति, ये दोनों का टाईटल तो भगवान-भगवती का है। और भगवान-भगवती सतयुग-त्रेता में नहीं कहे जाते। कहाँ कहे जाते? संगमयुग में ही भगवान-भगवती का टाईटल मिलता है। तो शिवोहम् ये कहकर के जो फॉलो करे या कर के फॉलो करे वो रांग हो जाता है। क्योंकि एक ही आत्मा का पार्ट है, परम आत्मा। क्या? आत्माओं में पार्ट बजानेवाली कैसी आत्मा? परम पार्टधारी, हीरो पार्टधारी। बाकी सब नहीं आत्मा सो परमात्मा हो सकते। इसलिए बोला कि बाप करावनहार का पार्ट बजाए रहा है। बच्चों से करा के छोड़ेगा, खुद करे या न करे।

Baba: They have to become deities. What is the main virtue of deities? Tolerance. So, children have to assimilate tolerance. And the body in which I enter, that body and his consort get the title of *Bhagwan-Bhagwati* (God-Goddess). And *Bhagwan-Bhagwati* are not said to be in the Golden Age or Silver Age. Where are they said to exist? The title of *Bhagwan-Bhagwati* is received only in the Confluence Age. So, it is wrong if someone says Shivoham (I am Shiva) and follows it or acts like Shivoham and follows it because only one soul plays the part of the Supreme Soul. What? What kind of a soul among all souls? The supreme actor; the hero actor. But every soul cannot be supreme soul. This is why it has been said that the Father is playing the part of an enabler (*karaavanhaar*). He will definitely make the children to do, whether He himself does or does not do.

50.37–53.18

जिज्ञासु— बाबा ये काया कंचन का अर्थ क्या है बाबा?

बाबा— काया बनती है पाँच तत्वों से। पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, आकाश का संघात है ये काया माना शरीर। और जो शरीर में पुरुषार्थ करनेवाली आत्मा योगी आत्मा बन जावेगी उसके वायब्रेशन सात्विक होंगे या तामसी, रजोप्रधान होंगे ? सात्विक वायब्रेशन होंगे। जिसके चारों तरफ वायुमण्डल ही सात्विक हो तो तामसी प्रकृति या माया उसके ऊपर आक्रमण कर सकेगी? नहीं कर सकती। वो प्रकृतिजीत आत्मायें कहलायेंगी। जो प्रकृतिजीत आत्मायें होंगी उनके पाँचों तत्व शरीर के, कोई न कोई तरीके से सुरक्षित जरूर रहेंगे। उनको आँच नहीं आ सकती। औरों को आँच आवेंगी।

Time: 50.37-53.18

Student: Baba, what is meant by *kanchan kaya*?

Baba: The body (*kaya*) is made up of the five elements. This body is a combination of Earth, water, wind, fire and sky. And when a soul that makes purusharth in the body becomes a yogi soul, will its vibrations be completely pure (*satwic*) or completely impure (*taamsi*) or partially pure (*rajopradhan*)? The vibrations will be *satwic*. Will the degraded nature or Maya be able to attack the one whose atmosphere itself is pure? It cannot. Those souls will be called conquerors of nature (*prakritijit*). The five elements of the *prakritijit* souls certainly

remain safe one way or the other. They cannot face any danger (*aanch*). Others will face danger.

जिज्ञासु— कंचन का मतलब ये शरीर सुरक्षित रहेगा.....?

बाबा— कंचन का मतलब कंचन बननेवाला है, आत्मा का जो सूक्ष्म शरीर है वो कंचन बन गया। वो सूक्ष्म शरीर किसी प्रकार की आपदा को नज़दीक नहीं आने देगा। कंचन तो तब बनेगा जब बर्फ में सारी दुनिया दबेगी।

जिज्ञासु— बाबा बर्फ में दबने के बाद जो, जब किसी का जो अंग नहीं रहता। किसी का टांग नहीं है, किसी का आँख नहीं है।

बाबा— अरे जिनका टांग नहीं, आँख नहीं उनके ऊपर माया ने, प्रकृति ने आक्रमण कर दिया ना। वो उस लिस्ट में कहाँ आ रहे हैं?

जिज्ञासु— मान लीजिए कोई पुरुषार्थी है.....

बाबा— पुरुषार्थी है और उसकी टांग कट गई तो पुरुषार्थी वो अधूरा है या योगबल वाला है? योग का कवच मजबूत है या ढीला-ढाला है?

जिज्ञासु—तो ज्ञान में अभी चल रहे हैं।

बाबा— अभी ज्ञान में चल रहे हैं और आखरीन ज्ञान में चलेंगे उसमें अंतर नहीं होगा?

Student: Does *kanchan* mean this body will remain safe....?

Baba: *Kanchan* means it is going to become *kanchan* (gold, i.e. completely pure); the subtle body of the soul has become *kanchan*. That subtle body will not allow any [natural] calamity to come near. It will become *kanchan* when the entire world is buried under ice.

Student: After being buried in ice; suppose someone does not have a particular organ; someone does not have a leg; someone does not have an eye.

Baba: Arey, those who do not have a leg or an eye have been attacked by Maya, by nature, haven't they? Are they included in that list?

Student: Suppose there is a purushartha.

Baba: There is a purushartha and if his leg is cut, then is that purushartha incomplete or is he with power of yog? Is the (*kavach*) shield of yog strong or weak?

Student:.....they are still following knowledge.

Baba: Will there not be a difference between the way they are following knowledge now and the way they will follow in the end?

54.08—56.40

जिज्ञासु— बाबा ये क्लीयर नहीं हुआ।

बाबा— क्या नहीं क्लीयर हुआ; पूरा बीच में छोड़ क्यों दिया तुमने? सोचते रह जाते हो। तब तक दूसरा प्रश्न कर देता है। हाँ, बोलो।

जिज्ञासु— बाबा जब किसी का अभी अंग नहीं है, शायद पैर नहीं है।

बाबा— अरे, अंग नहीं है इससे साबित होता है सम्पूर्ण योगी नहीं है, शूद्र कुल का है। जब बलि चढ़ाई जाती है देवी-देवताओं पर तो सम्पूर्ण अंगों वाला खोजा जाता है या खंडित अंग वाली बलि चढ़ाई जाती है?

जिज्ञासु— सम्पूर्ण अंग वाला।.....बाबा इसका कोई फायदा नहीं जो पुरुषार्थ करे अभी, बाबा के ऊपर पूरा निश्चय है?

बाबा— जिनको निश्चय होगा, जिनको निश्चय होगा उनकी विजय होगी या हार होगी?

जिज्ञासु— विजय होगी।जो पहले से हार चुका है वो अभी बाबा की.....

बाबा— जो हार चुका है उसकी तो बात ही मत करो यहाँ। उनका पद नीचा हो चुका। पाँचवी माल से नीचे गिर गये, हार गये।

Time: 54.08-56.40

Student: Baba, this is not yet clear.

Baba: What is not yet clear? Why did you leave it in between? You keep thinking. Meanwhile someone else asks another question. Yes, speak up.

Student: Baba, suppose someone does not have a particular organ; suppose he does not have a leg.

Baba: Arey, if an organ is missing, it proves that he is not a complete yogi; he belongs to the Shudra clan. When a sacrifice is offered to the deities, do they search for someone having all the organs or do they sacrifice someone handicapped?

Student: The one with complete organs.....Baba, is the effort that he makes and the complete faith that he has on Baba of no use?

Baba: Will the one who has faith gain victory or lose?

Student: He will win.....The one who has already lost, now Baba.....

Baba: Do not speak here about someone who has already been defeated. His post has degraded. He fell from the fifth floor; he was defeated.

जिज्ञासु— नहीं बाबा अभी हम देख रहे हैं ज्ञान में चलते, जो आत्मायें एडवान्स में चल रही है उसके अंदर कुछ—2 आत्माओं का ऐसा भी हालत है किसी का हाथ, किसका पैर, किसका... कुछ अंग ऐसे जो डिफेक्ट हुआ है।

बाबा— वो ब्राह्मण बनने से पहले ही हो गया।

जिज्ञासु— हाँ, जी। कंचनकाया का जब पीरियड आयेगा उन लोगों का वो जो शरीर का जो डिफेक्ट वो ठीक होगा ना.....

बाबा— ये कोई जरूरी नहीं है कि जो अंधा है वो कंचनकाया बनाने का पुरुषार्थ नहीं कर सकता, जो बूढ़ा है वो कंचनकाया बनाने का पुरुषार्थ नहीं कर सकता। फिर तो ईश्वरीय ज्ञान को दोष लग जायेगा। ये ईश्वरीय ज्ञान तो ऐसा है कि संसार में हर मनुष्य आत्मा को ईश्वरीय ज्ञान उपलब्ध हो सकता है।

जिज्ञासु— बाबा उन लोगों का गैरन्टी नहीं है इस नॉलेज के आधार पर।

बाबा— पुरुषार्थ के आधार पर है।

जिज्ञासु— वो हो सकता है क्या?

बाबा— पुरुषार्थ तीखा करेगा तो प्राप्ति करेगा। इसमें स्त्री, पुरुष का भी सवाल नहीं है। यहाँ तो सवाल है आत्मा बनने का, आत्मिक स्थिति धारण करने का।

Student: No, Baba, now we are observing that there are souls following the advance knowledge, among them there are such souls whose condition is such someone does not have an arm, someone does not have a leg, someone.....some organs are defected.

Baba: That happened before he became a Brahmin.

Student: Yes. When the period of *kanchankaya* begins, the defect of the body of those people will be rectified, will it not be?

Baba: It is not necessary that a blind person cannot make spiritual efforts to become *kanchankaya* or that an aged person cannot make spiritual efforts to become *kanchankaya*. Then Godly knowledge will become flawed. This Godly knowledge is such that every human soul in the world can get Godly knowledge.

Student: Baba, those people do not have a guarantee on the basis of this knowledge.

Baba: On the basis of spiritual efforts.

Student: Can that happen?

Baba: If he makes fast spiritual efforts, he will make an attainment. There is not even a question of being a female or a male in this. Here it is a question of becoming a soul, a question of achieving soul conscious stage.

56.41–57.30

जिज्ञासु— बाबा बाहर की दुनिया में जो इलेक्शन होती है उसमें हम बच्चों को वोट देना है? बाबा— प्रश्न आया बाहर की दुनिया में जो इलेक्शन होता है उस इलेक्शन में हमको वोट देना है या नहीं देना है? वोट तो गुप्त दिया जाता है या प्रत्यक्ष दिया जाता है? गुप्त दिया जाता है। जो चीज़ गुप्त दी जा रही है उसमें हमने दिया या नहीं दिया, क्या किया किसी को पता चलेगा?

जिज्ञासु— नहीं।

बाबा— तो हमें डर किस बात का?

Time: 56.41-57.30

Student: Baba, should we children vote in the elections that are conducted in the outside world?

Baba: A question has been raised whether we should vote in the election that is conducted in the outside world or not? Is a vote cast secretly or openly? It is cast secretly. If something is being given secretly, will anyone know whether we have given or not?

Student: No.

Baba: So, why should we fear?

57.40–59.23

जिज्ञासु— बाबा मनसा सेवा कैसे किया जाता है?

बाबा— मनसा सेवा और तनसा सेवा और धनसा सेवा। धन जिसके पास होगा वही तो धन की सेवा करेगा। करेगा कि नहीं? जिसके पास खाने-पीने से मोहिया धन होगा तो धन की सेवा करेगा? करेगा। जिसके पास धन होगा ही नहीं, दो रोटी खाने के लिए धन नहीं है तो धन की सेवा करेगा? नहीं कर पायेगा। ऐसे ही मनसा सेवा। मन जिसका पॉवरफुल होगा, एकाग्र होना माना पॉवरफुल होना। वो मनसा सेवा करेगा। मन एकाग्र है नहीं, घड़ी-2 चंचल हो रहा है। मन चंचल होता है तो दृष्टि पहले चंचल होने लग पड़ती है और कर्मेन्द्रियाँ घड़ी-2 चंचल होने लग पड़ती है। फिर वो सेवा करेगा कि डिससर्विस करेगा? डिससर्विस करेगा। तो मनसा सेवा का पहला मूल मंत्र है मनसा एकाग्र होना। जितनी मनसा एकाग्र होगी उतनी बैठे-बैठाए सेवा होगी। चारों तरफ से आत्मार्ये स्वतः ही आती जावेंगी सेवा लेने के लिए।

Time: 57.40-59.23

Student: Baba, how can we do service through mind?

Baba: Service through mind, through body and through wealth. Only the one who has wealth can do service through wealth. Will he or will he not? Will the one, who has enough money to eat and drink, do service through wealth? He will. Will the one, who does not have wealth at all, will the one, who does not have two *roties* to eat, do service through wealth? He cannot. Similar is the case with service through mind. The one whose mind is powerful; being focused means being powerful. Such person will do service through mind. If the mind is not focused, if it is becoming inconstant every moment; if the mind becomes inconstant, first of all the vision becomes inconstant, and then other bodily organs start becoming inconstant every moment. Then will he do service or disservice? He will do disservice. So, the main mantra of service through mind is to focus the mind. The more the mind is focused, the more service a person can do while sitting at one place. Souls will automatically come from everywhere to receive service.

.....
Note: The words in italics are Hindi words. Some words have been added in the brackets by the translator for better understanding of the translation.